देव संस्कृति विश्वविद्यालय

www.dsvv.acin

गीतामृतं

शारदीय नवरात्र

21 से 29 सितम्बर 2017

"किं कर्म" ?

"भूतभावोद्भवकरो विसर्ग: कर्मसंज्ञित:"

अक्षर ब्रह्म योग

अधिभूत ब्रह्म अधिदैव कर्म अध्यात्म अधियज्ञ अधिभूत अन्त में भगवान अधियज्ञ अधिदैव कर्म अन्त में भगवान ब्रह्म अध्यात्म अधिभूत कर्म अन्त में भगवान ब्रह्म अधिदैव अधियज्ञ अध्यात्म अधियज्ञ

नवरात्रि चतुर्थ दिवस

24/09/2017

विशेष उद्बोधन-

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या

कुलाधिपति, देव संस्कृति विश्वविद्यालय

विषय - अक्षर ब्रम्ह योग। (8वां अध्याय - श्री कृष्ण द्वारा अर्जुन के पूछे सात प्रश्नों के उत्तर)

नवरात्र चतुर्थ दिवस – तृतीय प्रश्न - किं कर्मः? , उत्तर - "भूतभावोद्भवकरो विसर्गः कर्मसंज्ञितः"। (गीता 8/1 , 8/3)

- **तीसरा प्रश्न अर्जुन का भगवान से - कर्म क्या होता है? किं कर्मः ?**
- आप कहते हैं कर्म करो, कर्म करो, कर्म करो पर ये कर्म होता क्या है?
- किसी भी विद्यार्थी के मन में एक प्रश्न उठ सकता है कि बार-बार कहते हैं कि कर्म करो, कर्म करो , अकर्म करते हुए मत रहो, निष्कर्म मत करो, विकर्म मत करो।
- वो अकर्म बड़ी ऊँची स्तर की सिद्धि है। जिसको अकर्म कहा गया है।
- पर कर्म जरूर करो। बिना कर्म किये मत रहो। ये कर्म है क्या? इसकी व्याख्या करेंगे।
- कर्म करते समय हम लोग बड़े असमंजस में रहते हैं कि करें कि ना करें? पर हमें ध्यान रखना चाहिए यह जो समय है वह विशेष है। समय विशेष में हमारी बुद्धि कभी भी गड़बड़ हो सकती है ऐसे में हम अपने आप को सही अर्थों में संभाल कर रखें सद्बुद्धि हमारे चिंतन में समाहित हो।
- **गीत - घड़ी संकट भरी यह अब, तुम ही पतवार बन जाओ...।**

विद्यार्थियों द्वारा प्रश्नोत्तरी –

- ब्रम्ह और परब्रम्ह में अंतर क्या है? - ब्रम्ह सर्वव्यापी है, पर इसपर एक संचालन कर्ता एक सृष्टि है जो ब्रम्ह का संचालन करता है वह परब्रम्ह है। परब्रम्ह को Invisible Consciousness परम चेतना कह सकते है।
- What exactly is scientific spirituality? - If spirituality is explained scientifically is scientific spirituality. If science is explained with the spiritual perspective this scientific spirituality. Scientific spirituality is science and spirituality get together and being explain together. DSVV is the first university in the world where scientific spirituality is taught as a subject. It is not a new religion it is The Religion. Scientific spirituality is going to be religion of tomorrow, of 21st Century. It is not a concept but it is something which is going to be the study of tomorrow. Where Can I Read more about this? There are 24 books related with this subject which are available in your library (DSVV) you can study more from that. All World Gayatri Pariwar propagating this knowledge by the lectures workshops, various programs, various seminars, various conventions where we explain the concept of scientific spirituality.
- जड़ में आता है या चेतन में? - मन होता तो जड़ है पर वह चेतन में आता है। मन में निरंतर लहरें उठती रहती है और यह है जड़ शरीर में। जब मन में कुछ नहीं चल रहा है तो आप जड़ है और मन में कुछ न कुछ गतिविधियाँ चल रही है तो आप चेतन है।
- नवरात्रि के समय में गरबा क्यों किया जाता है? - गरबा का मतलब होता है एक साथ मिलकर किया गया उत्सव देवी की आराधना में। आज इसका स्वरूप बिगड़ गया है इसके स्वरूप में विकृति आ गई है गड़बड़ियां होती है। बेसिकली शक्ति की आराधना के उल्लास में गरबा किया जाता है अपने अंदर की जड़ता को निकालने के लिए उल्लास के साथ गरबा किया जाता है।
- साधना के समय त्रुटि से कोई गलती हो जाए तो क्या संकल्प टूट जाते हैं? - नहीं! त्रुटि के लिए हमेशा समाधान है - क्षमस्व परमेश्वरः। हे परमेश्वर हमें क्षमा कर दीजिए, भगवान को भी हम सॉरी बोल सकते हैं, त्रुटि के लिए क्षमा प्रार्थना करें भगवान कभी नाराज नहीं होते। क्षमा प्रार्थना के साथ संकल्प पर चलते रहिये।
- सीमित मौन अच्छा है।
- वेदों में लिखा है मांस नहीं खाना चाहिए परंतु विदेशों में खाया जाता है उसकी लोकप्रियता है ये तो गलत बात है? - बेटा! हमारी संस्कृति में जो लिखा है वह एक अनादि, अनंत, शाश्वत वाक्य है। आज धीरे-धीरे विदेश के लोग Realise कर रहें है और शाकाहारी

बनते जा रहे हैं। आश्चर्य की बात यह है कि भारतीय लोग मांसाहार की तरफ बढ़ रहे हैं और विदेश के लोग शाकाहार की तरफ। शाकाहार जरूरी है क्योंकि हमारी आंते छोटी है और दांतें मांस काटने के लिए नहीं बनी है। आज समाज में जो तनाव है उसका एक समाधान है शाकाहार।

- अभ्यास और वैराग्य क्या है? - अभ्यास का मतलब होता है प्रैक्टिस और वैराग्य का मतलब होता है रेनॉनसीएशन, छोड़ना। अभ्यास पॉजिटिविटी का करो और वैराग्य निगेटिविटी का, पॉजिटिविटी का समावेश करो और निगेटिविटी को दूर करो।
- पढ़ाई पाठ्यक्रम पूरा करने के लिए पढ़ते हैं उसे जीवन में उतारने के लिए क्या करें आप बताइए? - देखो बेटा! तुम जो पढ़ाई करते हो ना वह तो कोर्स के हिसाब से करनी पड़ेगी वह आपका एक करिकुलम है वह तो करना पड़ेगा। यह जो करिकुलम है स्टडी है हमको क्यूरियस बनाती है पर जीवन में इसका अभ्यास साधना से होता है - जीवन साधना। मिनिमम 15 मिनट रोज साधना कर ले - आत्म चिंतन, आत्म निरीक्षण, आत्मसुधार और आत्म विकास बस इतना ही कर लो। सेल्फ डिवेलपमेंट की साधना करो परिवर्तन आएगा।

विषय वस्तु सार-

- **नवरात्र तृतीय दिवस - आज की देवी है कूष्माण्डा।**
- **कूष्माण्ड कहते हैं पेठा को।** ब्रम्हाण्ड की उत्पत्ति करने वाली देवी। देवी ऊपर उठती चली जातीं है - शैलपुत्री से ब्रम्हचारिणी से चंद्रघंटा से कूष्माण्डा। पिंड और ब्रम्हाण्ड का ज्ञान कराती है हमें। **पिण्ड और ब्रम्हाण्ड का तादात्म्य स्थापित होने की प्रक्रिया। जो पिण्ड में है वही ब्रम्हाण्ड में है "यत पिंडे तत ब्रह्मांडे"।** हमारे अन्दर जो भी है वह ब्रम्हाण्ड में भी है। यह जिसदिन हमें अनुभूति होगी उसकी एकात्मता प्रतीत होगी हमको। काकभुशुण्डी जी ने श्री राम के मुंह में ब्रम्हाण्ड देखा, माता कौशल्या ने श्री राम जी के मुंह में ब्रम्हाण्ड देखा, माता यशोदा ने श्री कृष्ण के मुह में ब्रम्हाण्ड देखा। ये "यत पिंडे तत ब्रह्मांडे" की अनुभूति है। पिण्ड –ब्रम्हाण्ड का रहस्य है कि "अणो अणीयान महतो महीयान" (ईश्वर अणु व विभु दोनो में समाहित), ब्रम्हाण्ड अन्दर भी है बाहर भी है। अगणित ब्रम्हाण्ड जो है वह कूष्माण्डा का स्वरूप है। ब्रम्हाण्डिय की चेतना की प्रथम अनुभूति कूष्माण्डा।
- आज के दिन हम अनाहत चक्र पर ध्यान करते हैं। और कल जो तीसरा दिन था तीसरे दिन मणिपुर चक्र में करते हैं और पहले दिन रूट प्लेक्सेस (मूलाधार चक्र) में ध्यान करते हैं दूसरे दिन सोलर प्लेक्सेस (स्वाधिष्ठान चक्र) में।
- **आज का जो प्रश्न है वह है किं कर्म? कर्म क्या होता है?**
- भगवान कहते हैं कर्म एक ऐसा सत्य है, एक ऐसा तथ्य है जिससे हम रोजमर्रा की जिंदगी में परिचित होते रहते हैं, कर्म किए बिना हम नहीं रह सकते। कर्म क्या है? इसके दर्शन को, इसकी गहराई को, इसके विज्ञान को हम समझते नहीं हैं सूझ बूझ, विवेक के साथ हम कर्म करते ही नहीं है। हमारे सामने परिस्थितियां आती हैं और परिस्थितियों के इंटरेक्शन में मनः स्थिति में आवेग उठते हैं, हमारे मन में प्रश्न होते हैं, लहरें उठती हैं कि करो इसको। जब मन लहरें उठती है तो कुछ करने लगते हैं। जैसे मानलो घर में बैठे बाहर से कोई संदेश आया हम बाहर गए और मिलकर आए किसी से, यह क्या है यह कर्म हुआ तुम्हार परिस्थिति के जवाब में। अगर शुभ फल हम सफल हुए तो हम अपनी उपलब्धियां बताते हैं और जहां-जहां हम विफल हुए हम नहीं बताते हैं नहीं बता पाते। क्योंकि हम को बताने में संकोच होता है। दरअसल हम सफल हो ही जाते लेकिन कुछ ऐसी घटना घट गई कुछ ऐसा हो गया कि हम नहीं कर पाए कर्म की गति बड़ी गहरी है।
- **परम पूज्य गुरुदेव ने एक किताब लिखी गीता के वाक्य पर - "गहना कर्मणो गति"। कर्म की गति बड़ी गहन है।**
- **कर्म की गति को समझना बहुत मुश्किल है। (कर्म, अकर्म, विकर्म और नैष्कर्म्य)**
- हमारे कर्म हमारे साथ चिपक जाते हैं और छूटते नहीं है। हम जो भी कर्म करते हैं जाने-अनजाने में, वह हमारे साथ चिपक जाते हैं। गीता में भगवान ने कर्म के कई भेद बताए हैं इसी तरह पतंजलि योग सूत्र में भी बताया गया है कर्म कितने प्रकार के होते हैं, कर्म क्या है, कैसे हैं, संस्कार क्या है सब बताया गया है।

- अर्जुन प्रश्न करते हैं कि कर्म क्या है - तो भगवान कहते हैं - "भूतभावोद्भवकरो विसर्गः कर्मसंज्ञितः" अर्थात् भूतों के भाव को उत्पन्न करने वाला जो त्याग है, वह 'कर्म' नाम से कहा गया है।

  श्लोक-

  किं तद्ब्रह्म किमध्यात्मं **"किं कर्म"** पुरुषोत्तम।

  अधिभूतं च किं प्रोक्तमधिदैवं किमुच्यते॥

  भावार्थ- अर्जुन ने कहा- हे पुरुषोत्तम! वह ब्रह्म क्या है? अध्यात्म क्या है? कर्म क्या है? अधिभूत नाम से क्या कहा गया है और अधिदैव किसको कहते हैं॥1/1॥

  श्लोक-

  अक्षरं ब्रह्म परमं स्वभावोऽध्यात्ममुच्यते।

  "भूतभावोद्भवकरो विसर्गः कर्मसंज्ञितः"॥

  भावार्थ- श्री भगवान ने कहा- परम अक्षर 'ब्रह्म' है, अपना स्वरूप अर्थात जीवात्मा 'अध्यात्म' नाम से कहा जाता है तथा भूतों के भाव को उत्पन्न करने वाला जो त्याग है, वह 'कर्म' नाम से कहा गया है॥8/3॥

- भूत अर्थात प्राण, प्राणी। "प्राणियों के अंदर भावों को उत्पन्न करने वाला जो त्याग है वह कर्म है। " विसर्ग मतलब त्याग।
- भूत के कई अर्थ होते हैं। कई चीजों के परिप्रेक्ष्य में इसका अर्थ लिया जाता है।
- **भूत हम कहते हैं -**

  भुवन एक पति होई। भूत द्रोह तिष्टइ नहिं सोई॥

  गुन सागर नागर नर जोऊ। अलप लोभ भल कहइ न कोऊ॥4॥ (तुलसीदास जी)

  भावार्थ - चौदहों भुवनों का एक ही स्वामी हो, वह भी जीवों से वैर करके ठहर नहीं सकता (नष्ट हो जाता है) जो मनुष्य गुणों का समुद्र और चतुर हो, उसे चाहे थोड़ा भी लोभ क्यों न हो, तो भी कोई भला नहीं कहता॥4॥
- शायद दुनिया में तुलसीदास जी ने हड़ताल का पहला सूत्र दिया कि अगर1 हड़ताल होगी तो ऐसी होगी सभी के सभी मिलकर जब एक हो जाएंगे तो राजा को सोने नहीं देंगे। यह भूत द्रोह कहलाता है।
- **भूत यानि जीवधारी**। अंग्रेजो के खिलाफ गांधीजी ने भूत द्रोह कर दिया, भारत छोड़ो आंदोलन। सारे देशवासी एक साथ अंग्रेजों के विरोध में आ गया। एक भूत मतलब होता है प्राणी लेकिन कई भूत यानि ढेर सारे प्राणी। सब ने विद्रोह कर दिया तो भूत का एक अर्थ होता है प्राणी।
- **भूत का दूसरा अर्थ होता है - Past, अतीत।** Past ia a thing which is passed already. भूत भविष्य वर्तमान के अर्थ में भी भूत कहा जाता है अतीत को हम भूत कहते हैं।
- **तीसरा अर्थ है भूत का जो मर जाता है उसे हम भूत कहते हैं।** भूत होते हैं **भूत एक योनि है**। जब जीवात्मा मरने के बाद विक्षुब्ध मनस्थिति में जाती है तो प्रेत योनि में चले जाती है इसको कहा गया है भूत योनि/प्रेत योनि।
- इस जन्म में जितने भी हमारी वासनाएं है, इच्छाएं हैं कामनाएं हैं वह चली जाती है हमारे साथ। (विक्षुब्ध मनःस्थिति) मजबूत मनस्थिति वालों के पास भूत नहीं आता।
- **भूत का चौथा अर्थ है पंचमहाभूत - पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश**। यह पंचमहाभूत कहलाते हैं। महाभूत क्यों कहते हैं क्योंकि सारे भूत इन्हीं से बनते हैं कहा गया है मानवीय काया इन पांचों चीजों से बनी हुई है। इन बातों का समन्वय ही मानवीय काया है। चाहे वह मरा हुआ जीव हो या जीवित। सृष्टि जहां तक है लोक-परलोक जो भी है वह सब भूत बनाती हैं यह प्रधानता पृथ्वी महाभूत की है आदमी भूत बन गया तो वहां पर प्रधानता वायु तत्व की है अलग-अलग तत्व की अलग-अलग प्रधानता होती है। देवताओं के शरीर अग्नि तत्व प्रधान है इस कारण से ही उनके चेहरे पर तेजोवलय होता है। ऐसे कर के भूत के कई अर्थ होते हैं।

- **तो कर्म को बताते हुए भगवान कहते हैं - "भूतभावोद्भवकरो विसर्गः कर्मसंज्ञितः" अर्थात् भूतों के भाव को उत्पन्न करने वाला जो त्याग है, वह 'कर्म' नाम से कहा गया है।**
- भाव जो होते हैं वह छूट जाते हैं और कर्म सामने खड़ा हो जाता है। उदाहरण - जैसे हमारे अंदर गुस्सा आया, भाव ऐसा आया कि किसी से हम लड़ लिए फिर वह गुस्सा कुछ पल बाद कहां गया हमें पता ही नहीं। उसका विसर्ग हो गया जो हमारे अंदर चिपका हुआ गुस्सा था वह तो भाग गया, छूट गया लेकिन उस ड्यूरेशन में में हमने जो कुछ भी कहा, गाली दी, उसको मारा, सुनाया वह एक कर्म बन गया। बात खत्म हो गई पर यह कर्म बन गया। और यह जो कर्म बना यह हमारे साथ चिपक गया। ऐसे ही आपके अंदर प्रेम आया एक भाव पैदा हुआ और उस प्रेम को छोड़ा तो विसर्ग हुआ।
- कुछ भाव गहरे होते हैं, आसक्ति होती है, किसी के प्रति मोह हो जाता है। बार-बार हम किसी के लिए कुछ करते रहते हैं। हमारे अंदर प्राणियों के लिए तरह-तरह के भाव पैदा होते हैं, उनको छोड़ते हैं, फिर नए-नए कर्म करते हैं। भावों के पैदा होने की श्रृंखलाएं चलती रहती है उनके त्यागने की श्रृंखला भी चलते रहती है। ऐसा नहीं है कि मनुष्य के अंदर ही भाव पैदा होते होते हैं पशुओं के अंदर भी पैदा होते हैं।
- भाव पैदा होते ही कर्म बन जाते हैं। जितने भी प्रकार के रिश्ते नाते हैं सबमें जितने भी प्रकार के भाव होते हैं उन्हें कर्म की संज्ञा दी जाती है।
- सुबह से लेकर शाम तक जो भी कर्म करते हैं उसका विवरण। डायरी लिखने के लिए क्यों कहा जाता है इसलिए ताकि हम अपने कर्मों को लिखें, सुबह से शाम तक क्या किया था अपना निरीक्षण कर सकें।
- कभी-कभी हमारे भाव छोटे होते हैं तो कभी-कभी भाव बड़े होते हैं भावों का हमें विसर्ग करना पड़ता है। भावों की लहर उठने पर जो विसर्ग किया जाता है उसको छोड़ने के लिए जो किया जाता है उसको कर्म कहते हैं।
- हमारे अंदर दिनभर में जाने अनजाने भावों की अनेकानेक लहरें उत्पन्न होती रहती है इसका मतलब न जाने हम कितने कर्म करते हैं हम दिन भर में जाने अनजाने जो कर्म करते हैं वह हमारे साथ चिपक जाते हैं। हमारे अंदर एक तीव्र लहर उठी हमने काम किया जो भी किया अच्छा-बुरा, सारे कर्म चिपक जाते हैं दोनों ही अपने परिणाम प्रस्तुत करते हैं।
- कर्म किए बिना हम नहीं रह सकते। भगवान श्री कृष्ण गीता में कहते हैं -
  श्लोक-
  "न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्।"
  कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः॥
  भावार्थ- निःसंदेह कोई भी मनुष्य किसी भी काल में क्षणमात्र भी बिना कर्म किए नहीं रहता क्योंकि सारा मनुष्य समुदाय प्रकृति जनित गुणों द्वारा परवश हुआ कर्म करने के लिए बाध्य किया जाता है ॥3/5॥
- फालतू कर्म करने की जगह अच्छे कर्म करो।
- अर्जुन कहते हैं कृष्ण से मैं युद्ध नहीं करूंगा, भिक्षा मांगूंगा। भीख मांग कर गुजारा कर लूंगा ऐसा कहने के पीछे एक कारण भी है एक पिछला अनुभव कहता हैं अर्जुन का। पांडव वन में रह चुके हैं चक्रानगरी में ब्राह्मण के रूप में रह चुके हैं और वहां पर भिक्षा मांग कर गुजारा किया क्योंकि 1 साल अज्ञातवास में रहे। भगवान कहते हैं ठीक है भिक्षा मांगने का अनुभव है लेकिन तुम्हारे अंदर एक अनुभव और है वह है क्षत्रिय का। योद्धा का भाव। तुम भीख मांगकर नहीं रह सकते कोई न कोई ऐसा कर्म तुम करोगे जो तुम्हारे अंदर का भाव कहता है स्वभाव कहता है।
- अध्यात्म क्या कहता है? तुम्हारे अंदर का स्वभाव क्या कहता है? अंदर का जो स्वभाव कहेगा वह तुम करोगे। तुम्हारा स्वभाव ही तुम्हारा कर्म बनाता है। तुम यह हठ मत करो कि हम कर्म नहीं करेंगे, हम ये नहीं करेंगे, हम भीख मांगकर रह लेंगे भगवान कहते हैं नहीं! गलत ! यह तुम्हारा हठ है एक भाव की तीव्र लहर उठेगी और तुम युद्ध करने लग जाओगे फिर भिक्षा छोड़ द। भिक्षा का भाव तुम्हारे अंदर है ही नहीं। युद्ध करो।

- जो भाव सघन होता है जिसको आप पोषित करते हैं वही कर्म बन जाते हैं। जैसे किसी व्यक्ति को पढ़ने में रुचि है तो किसी के घर जाय तो वहां कोई किताब या मैगजीन रखी है तो वह पढ़ने के लिए उठा लेगा। क्यों? क्योंकि पढ़ने का भाव सघन हो चुका है। वहां और भी कई चीजें हैं पर वह नहीं उठाता, किताब उठाता है क्यों? क्योंकि उसका स्वभाव पढ़ने का है।
- **कर्म का उद्गम, कर्म का अंकुरण, कर्म का उद्भव भाव से होता है। जब उस भाव को त्याग देते हैं तो हमारा कर्म मूर्त रूप ले लेता है। यानि कर्म जो आकार लेता है वह इसके बाद लेता है।**
- प्रायः हम आवेगो में आकर भावों की लहरों से कर्म करते रहते हैं। सोच-विचार विवेक और चित्त के सारे प्रश्न उठते वहीं है। इसके लिए हमें प्रशिक्षण की जरूरत पड़ती जैसे भाव जगे हमने कर्म किया और सोचते हैं कि कर्म से पीछा छूट जाए। कर्म से पीछा छूटता नहीं है। भाव से पीछा छूट जाता है पर कर्म से पीछा नहीं छूटता। वह भाव कर्म बन गया लेकिन कर्म से पीछा भोग करके छूटता है कर्म से पीछा कब छूटेगा जब उस कर्म(शुभ/अशुभ कर्म) को भोग लोगे। भोगे बिना कर्म नहीं छूटेगा।
- किसी ने कोई कर्म किया चाहे अच्छा या बुरा जो भी है। कोई किसी के पैसे चुरा लिए और चोरी पकड़ी गई या किसी मंदिर में गए वहां देखे लोग दक्षिणा दे रहे हैं प्रणाम किया धीरे से दक्षिणा चुपके से उठाई और जेब में डाल लिया। लगा कि किसी ने नहीं देखा पर यह जो कर्म किया वह चिपक गया। जेल जाकर छूटेंगे ऐसा नहीं है यह तो जन्म-जन्मांतर तक चलते रहेंगे, भोगते रहेंगे भगवान की जेल में।
- हमारे कर्म की यात्रा अनवरत यात्रा है। हमारे कर्म शुभ हों,श्रेष्ठ हों, अच्छे हों। यह तभी होगा जब हमारे मन के अंदर भावों का परिष्कार होगा अध्यात्म हमारे अंतर्भावों का परिष्कार करता है।
- **शुभ भाव शुभ कर्मों को परिणाम देते हैं और अशुभ भाव अशुभ कर्मों को।**
- **आंतरिक संरचना जैसी होगी कर्म वैसा होगा।**
- कर्मों के परिणाम से हम बच नहीं सकते। हमें बचना है तो दूषित कर्मों से, कर्म से नहीं बचना है बल्कि दूषित कर्मों से बचना है। दूषित कर्म ही हमें बार-बार परेशान करता है।
- भाव से लेकर कर्म तक और कर्म से लेकर कर्म के फल तक यह प्रक्रिया चलती रहती है एक यात्रा चलती रहती है। भाव, कर्म, कर्म का फल।
- सारे कर्मफल हमारे अनुरूप नहीं हो सकते। हमारी कल्पनाओं के हमारी इच्छाओं के अनुरूप कर्मफल नहीं होते। हम कर्मों के मालिक नहीं हो सकते कर्मों का मालिक भगवान है वह डिसाइड करते हैं कि क्या फल देना है।
- भाव के कितने रूप होते हैं - भाव की एक लहर उठी फिर लहर ने आकार लिया इस आकार को कहते हैं कल्पना। एक भाव की लहर उठी फिर वह कल्पना बन गई फिर यह कल्पना विचार बन गई कि ऐसा करना चाहिए उसके बाद वह विचार गहरा हुआ तो गहरा भाव बन गया, और जो उभरा था थोड़ा सा उसने देखते देखते एक योजना बना दी कि इस विचार को कैसे इंप्लीमेंट करना चाहिए तो फिर वह संकल्प बन जाता है और संकल्प बनते ही कर्म बन जाता है।
- **भाव की लहर => कल्पना => विचार => गहरे भाव => योजना => संकल्प => कर्म।**
- इस क्रम को हम अगर पॉजिटिव लेंगे तो पॉजिटिव आवेश होंगी और पॉजिटिव कर्म होंगे।
- संकल्प से ही सृष्टि होती है। संकल्प का कोई विकल्प नहीं होता।
- संकल्प से पहले इतनी प्रकार की हमारे अंदर रसायनिक क्रिया घटित होती हैं -
- **भाव का बीजांकुर, फिर कल्पना का रूप लेना, फिर विचार के रूप में संवरना, इसके बाद इच्छा के रूप में दृढ़ होना फिर संकल्प के रूप में अतिदृढ़ होना और उसके बाद फिर कर्म। कर्म के पहले 5 स्टेप्स है।**
- हमारे कर्म में कई चीजें शामिल हो जाती है। कर्म में क्या होता है क्रिया जो हम अपने शरीर से करते हैं, फिर विचार और भाव का मेलजोल होता है संकल्प बनता है फिर कर्म होता है।
- कर्म के स्थूल परिणाम भी होते हैं और सूक्ष्म परिणाम भी होते हैं।

- कर्म जब पुण्य के साथ जुड़ता है तो वह श्रेष्ठ कर्म हो जाता है। शुभ कर्मों से पुण्य कर्मों से हमें आशीष मिलता है और अशुभ कर्म, बुरे कर्मों की हाय भी लगती है, दुष्परिणाम मिलते हैं।
- **स्वामी विवेकानंद जी ने सॉन्ग ऑफ सन्यासी में लिखा है -**
  फल शुभ अशुभ कर्मों के, शुभ कर्मों के हैं शुभ फल।
  किसकी सामर्थ्य बदल दे, यह नियम अटल और अविचल।
- शुभ (अच्छे) भाव, शुभ कर्म, शुभ फल और अशुभ(बुरे) भाव, अशुभ कर्म, अशुभ फल।
- **Story -** एक सेठ जी थे बहुत बड़े मध्य प्रदेश के। सेठजी की बहू को एक भूत लग गया, ब्रम्हराक्षस लग गया। ब्रम्हराक्षस मतलब भूत लग गया उनको सताने लगा परेशान करने लगा उन्होंने ओझा बुलाए, तांत्रिक बुलाए, झाड़ फूंक करने वालों को बुलाया तो उन्होंने कहा कि क्या बात है? झाड़ फूँक करने वालों ने कहा कि हम भूत भगा रहे हैं फिर जो सज्जन व्यक्ति थे उन्होंने कहा कि इनसे पूछो कि इनको क्यों सता रहे हो तो उन्होंने उनसे पूछा तो लड़की की आवाज में ही आवाज आई - कि हम इसलिए सता रहे हैं कि आप हमें मुक्त कर दें। हम छोड़ देंगे यह लड़की हमारा मुद्दा नहीं है आप इस घर में आते रहते हैं आप हमारी मुक्ति करा दो हम इसको छोड़ देंगे हमारा इस लड़की से कोई लेना देना नहीं है हमने तो इसे इसलिए पकड़ कर रखा है कि आप इसके माध्यम से यहां आए और आप हमें मुक्त कर दें। फिर उन्होंने कहा कि हम कैसे पीछा छुड़ाएं तुम बताओ तो फिर भूत ने कहा कि एक पंडित जी हैं गांव में जो भागवत पढ़ते हैं अगर उनके 1 दिन का पुण्य हमें मिल जाए तो हम मुक्त हो जाएंगे। उनके 1 दिन का पुण्य हमको चाहिए फिर लोग उस भागवत पढ़ने वाले पंडित जी के पास गए और कहे कि पंडित जी सेठ जी की बहू को ब्रम्हराक्षस परेशान कर रहा है वह आपका एक दिन का पुण्य मांगता है। पंडित जी बोले कि हमने तो कोई पुण्य ही नहीं किया मैं तो सिर्फ भागवत पढ़ता हूं और कुछ नहीं। पंडित जी सेठ जी के घर गए ब्रम्हराक्षस से कहते हैं कि मैं तो भागवत पढ़ता हूं मैंने तो कोई पुण्य ही नहीं किया मेरे एक दिन का भागवत ले लो 2 दिन का भागवत ले लो लेकिन उस बच्ची को छोड़ दो। तुमने क्यों पकड़ रखा है इसे तो वह बोले आप जो भागवत कथा करते हैं इसके बदले दक्षिणा लेते हैं पंडित जी बोले हां दक्षिणा लेता हूं पर यह कोई पुण्य नहीं है। ब्रम्हराक्षस बोला कि मैं आपको याद दिलाता हूं आप स्मरण करिये कि एक दिन जब आप घोड़े पर जा रहे थे, जाड़े के दिन थे भागवत कथा रात भर बोले। सवेरे अपनी गाड़ी पर जा रहे थे तो चार-पांच लोग चल रहे थे। पंडित जी धीरे धीरे चलने लगे तब चार-पांच लोग आपस में बातें कर रहे थे तो उन्होंने सोचा क्या बात कर रहे हैं इसे सुना जाए। तब उस समय एक मजदूर ने कहा काश ऐसा होता कि हम गरम गरम पानी से नहाए थके हुए मजदूर थे सब जा रहे थे साथ में, कहे कि कहां ऐसा होगा मिट्टी से सने हुए शरीर को कौन नाहलायेगा, दूसरे ने कहा नहाने के बाद सरसों का तेल लगाआगा हुआ हो। यह सब उनके लेवल के सुख थे मजदूरों के लेवल के। तीसरे ने कहा दोनों कल्पना बहुत अच्छी है पर इसके बाद बाजरे की रोटी मिले घी में चुपड़ी हुई गुड़ के साथ बाजरे की रोटी मिले सब्जी मिले और पांचवा बोला कि खीर भी मिल जाए तो आनंद है तो पंडित जी पीछे पीछे चल रहे थे वह बोले कि क्यों भाई तुम परेशान हो अगर यह सब चीज तुमको मिल जाए तो? तो उन्होंने कहा कि महाराज आपकी बहुत कृपा होगी। मजदूर ने दूसरे मजदूर से कहा कि मजा आ जाएगा अगर ऐसा कुछ हो गया तो। तो पंडित जी उनको अपने साथ ले गए और ले जाकर के कमरे में कहा कि तुम सो जाओ तो वह सब बोले पहले हमें स्नान कर ले फि। इस तरह पंडित जी के मन में एक दया का भाव आया और जो जो मजदूरों ने सोचा था वह सारी चीजों को पंडित जी ने पूरा किया सरसों का तेल भी दिया बाजरे की रोटी भी खिलाई, खीर भी खिलाई। सोने को भी बोला और पूरे दिन की मजदूरी भी दी पंडित जी ने पहली बार कोई ऐसा शुभ काम किया पंडित जी ने मजदूरों को दक्षिणा दी और शुभ काम शुभ भावों के साथ जपते चले गए। ब्रम्हक्षस बोला पंडित जी आपको याद आया तो पंडित जी बोले कि आप आज से 40 साल पुरानी बात आप बता रहे हो बोले हां हमने किया था तो ब्रम्हराक्षस बोले हमें वही पुण्यकर्म चाहिए वह पुण्य दे दो तो हम तुरंत छोड़ देंगे तो पंडित जी ने संकल्प किया कि उस पुण्य का फल मुझे नहीं इनको मिलना चाहिए और वह कर्म पुण्य दे दिया तो वह पिशाच छूट गया।
- पुण्यकर्म मिलने पर पिशाच भी छूट जाते हैं।
- कर्मकार ऐसा महत्व होता है यदि कर्म के साथ शुभता जुड़ती जाए तो कर्म कई शुभ परिणाम लाता है।

- राजस्थान में आज भी एक परंपरा है राजस्थान में पितरों को बड़ा महत्व देते हैं श्राद्ध तर्पण करते हैं। जब राजस्थान में कोई व्यक्ति मरता है तो ब्राह्मण कर्मकांड कराता है परिवार के लोगों को संकल्प कराता है कि हम अपने एकादशी व्रत का फल इस जीवात्मा के निमित्त देते हैं। न जाने कितने प्रकार के ऐसे संकल्प होते हैं। रिश्ते में अगर हमारा कोई व्यक्ति हो और उसके बदले में हम कोई फल चाहते हैं तो वह हमें मिलेगा।
- शुभ कर्म से शुभ फल, अशुभ कर्म से अशुभ फल।
- **हमारे यहां विद्वान कहते हैं कबीरदास जी ने कहा है-**
  दुर्बल को न सताइए , जाकी मोटी हाय।
  मुई खाल की स्वांस सो,सार भसम हुई जाय।।
  भावार्थ - संत कबीर दास जी कहते हैं कि शक्तिशाली व्यक्ति को कभी अपने बल के मद में चूर हो कर किसी दुर्बल पर अत्याचार नहीं करना चाहिए क्योंकि उस दुर्बल निर्बल की हाय बहुत ही चोंट पहुँचाती। जिस प्रकार लोहार कि चिमनी निर्जीव होते हुए भी लोहे(सार) को भस्म करने कि शक्ति रखती है ठीक उसी प्रकार दु:खी व्यक्ति कि बद्दुआओं से समस्त कुल का नाश हो जाता है।
- कर्म की उर्जा हमारे चित्तमें कहीं ना कहीं संग्रहीत हो जाती है और कॉल के गर्भ में उसका परिपाक होता है बाद में फिर वह परिणाम देती है भोग देती है।
- **पतंजलि योग सूत्र में तीन तरह के कर्म बताए गए हैं - शुक्ल कर्म (अच्छे कर्म) कृष्ण कर्म (बुरे कर्म) और शुक्ल-कृष्ण(अच्छे-बुरे मिलकर) मिले जुले कर्म।**
- कर्मों के फल से कोई नहीं बच सकता।
- एक घटना है जो कल्याण में छपी थी जो यह बताती है कि कर्मों का फल हमें मिलता है उसे कोई नहीं बच सकता। एक व्यक्ति तो बहुत पैसे वाला उसके यहां एक बेटा पैदा हुआ, बच्चा बहुत बीमार रहने लगा। बीमारी खूब बढ़ती गई बीमारियों का खूब इलाज कराया लेकिन ठीक नहीं हुआ कई जगह इलाज कराया फिर भी ठीक नहीं हुआ, बहुत सारे पैसे भी खर्च कर दिए उस सेठ का बहुत सारा पैसा खर्च हो गया एक दिन वह बच्चा जोर से हंसा और बोला- पहचाना मैं कौन हूं तब वह सेठ बोला तू तो मेरा बेटा है तो वह बच्चा बोला नहीं नहीं मैं तुम्हारा पार्टनर हूं जिसको तुमने धोखा करके मार दिया और मेरा सारा हिस्सा लूट लिया और तुमने अपना बिजनेस बढ़ा लिया मैं तुमको बर्बाद करने के लिए आया हूँ। अंततः उसने उसको पूरा बर्बाद कर दिया। उन दोनों आत्मा और जीवात्मा को संस्कार ने जोड़े रखा।
- प्यार और नफरत दोनों का संस्कार होता है।
- पतंजलि इसीलिए कहते हैं - अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश। (2/3, PYS)। यह पांच क्लेश हैं जो संस्कार की डोर से बंध जाते हैं। हम जो अच्छे बुरे कर्म करते हैं हमसे चिपके रहते हैं इसलिए भगवान श्री कृष्ण गीता में कहते हैं -
- **श्लोक-**
  कर्मणो ह्यपि बोद्धव्यं बोद्धव्यं च विकर्मण: ।
  अकर्मणश्च बोद्धव्यं गहना कर्मणो गति:॥
  भावार्थ- कर्म का स्वरूप भी जानना चाहिए और अकर्म का स्वरूप भी जानना चाहिए तथा विकर्म का स्वरूप भी जानना चाहिए क्योंकि कर्म की गति गहन है ॥4/17॥
- कर्म वह है जो हमने किया। जिसके लिए हमारे अंदर भाव जगे और हमने किया।
- अकर्म वह है कि हमने कुछ किया ही नहीं सोच लिया कि बस दुनिया अच्छी होजाये। इसके लिए हम साधना कर सकते हैं बिना कुछ किए कुछ विचार अच्छे बना लेना। जो कर्म में अकर्म को देख लेता है वह ज्ञानी है। सामान्य क्रम में जो हम कर्म करते हैं वह हमसे जुड़ जाता है लेकिन कर्म में मैं इतना जुड़ जाता है कि हम सघनता स्वीकार करते हैं।
- **हमारे अस्तित्व के दो हिस्से हैं एक होना और दूसरा करना। (Being and Doing)**

- **हम क्या करते हैं Being को तो भूल देते हैं और Doing में पूरा रम जाते हैं। मैंने यह, किया मैंने वह किया, मैंने दान किया, मैंने मंदिर बनवाया, मैंने इतने सारे लोगों को भोजन करवाया, मैंने इतने सारे अच्छे काम किये एक में जुड़ता चला जाता है।**
- **मनुष्य का कृतित्व और व्यक्तित्व दो रूपों में व्यक्त होता है - Being और Doing. हम Being से हट जाते हैं Doing से जुड़ते चले जाते हैं। तो हमारे Doing में कर्म की प्राण प्रतिष्ठा हो जाती है, जबकि होना क्या चाहिए तो हमारे Being में प्राण प्रतिष्ठित होना चाहिए।**
- **भगवान कहते हैं अकर्म, कर्म तो करते हैं पर Doing में नहीं रहते।**
- **कर्म करते हुए कर्ता का भाव होना - कर्म।**
  कर्म करते हुए भी कर्ता का भाव नहीं होना - अकर्म।
  कर्म करते हुए भी गलत काम करना - विकर्म। (निषिद्ध कर्म करने वाला विकर्म)
- **हमारे कर्म के अनुसार अपने परिणाम होते हैं।**
- रामकृष्ण परमहंस कहते हैं कटहल को काटो तो तेल लगा कर काटो। चिपकेगा नहीं। तो कटहल को तो काटा, काटने का आनंद भी आया, सब्जी भी खाई पर चिपका नहीं क्यों? तेल लगाया इसलिए। तात्पर्य यह है कि यहां पर कर्म है पर वह आसक्ति और अहंकार से मुक्त है।
- आसक्ति और अहंकार से मुक्त होकर कर्म करना - अकर्म। जैसे - रमण महर्षि, परम पूज्य गुरुदेव बहुत बड़ा कर्म कर गए, विचार दे गए। उन्होंने कहीं भी नहीं कहा कि यह हमने किया है हमेशा यही कहे कि यह तो महाकाल की योजना है हम तो सिर्फ उनके निमित्त मात्र हैं। और रमण महर्षि उन्होंने बैठे - बैठे ही बहुत कुछ किया।
- कर्म करते करते यदि निष्कामता की भावना रखी तो वह कर्म नैष्कर्म्य कहा जाता है। भगवान को अर्पित कर देना, आप जो भी कर्म करें उसको भगवान को किस कर देना नैष्कर्म्यता है।
- **शुभ-अशुभ कर्मों से व्यक्ति जब मुक्त हो जाता है - नैष्कर्म्यता।**
- हमारे कर्मों में अनेक प्रकार के भाव होते हैं। ज्योति शास्त्र में 12 भाव 9 ग्रह बताए गए है। आपने दान-पुण्य किया है जीवन में, लेकिन लोगों का दिल तोड़ा है, दिल दुखाया है तो आपके परिवार को सुख नहीं मिलेगा ऐसा ज्योतिष शास्त्र कहते है।
- हमारे जीवन में अशुभ भावना न रहे और चारों तरफ से शुभ भाव रहे तो जीवन धन्य हो जाएगा।
- कर्म के अंत में शांति प्राप्त हो ऐसे कर्म करने चाहिए। जैसे भगत सिंह, शहीद हुए उनको अपनी शहादत की शांति थी दुख नहीं था क्योंकि उनको पता था कि हमारे बाद एक ज्वार खड़ा होगा, युवाओं में क्रांति होगी और देखते-देखते गांधी जी के आंदालनों को गति मिलेगी देश आजाद होगा और देश आजाद हुआ इसमें भगत सिंह का सबसे बड़ा योगदान था।
- जिस व्यक्ति के कर्म के अंत में शान्ति हो, शान्ति का अनुभव करे तो वह व्यक्ति अच्छा व्यक्ति है।
- कर्म करने पर शान्ति, पीछे आशीर्वाद, कर्म के फल प्रकट हो तब प्रसन्नता ऐसे कर्म करने चाहिए। प्रकृति, ईश्वर और गुरु सबसे आशीष मिले।
- कहते हैं भारत में जब तैमूरलंग आया तो, तैमूरलंग बड़ा ही विचित्र आदमी था, लंगड़ा था और जब आया तो कत्लेआम किया, खूब नर संहार किया। तब एक फ़क़ीर आया उसके पास उसने फ़कीर से कहा हमारे बारे में बताओ, भविष्य बताओ। तो फ़कीर बोला तू ये बता कि तेरे राज्य में बरसात होती है तो तैमूर ने कहा हाँ होती है। तो फ़कीर बोला जरूर वहां पशु-पक्षियों के कर्म अच्छे होंगे इसलिए वहां बारिश होती है नहीं तो तेरे, जैसे कर्म है कुकर्म है उस हिसाब से तो तेरे राज्य में बारिश भी नहीं होनी चाहिए। तैमूर को ये बात चुभ गयी। बोला तुम जानते हो किससे बात कर रहे हो। मैं अभी तुम्हारा गर्दन कटवा सकता हूँ। तो फ़कीर बोला तू और क्या कर सकता है यही कर सकता है बस। सोच अबतक क्या करता रहा, विचार कर भगवान ने तुझे लंगड़ा क्यों बनाया है? भगवान ने तुझे इतना पैसा दिया है, साम्राज्य दिया है पर भोग करने के लिए योग्य नहीं बनाया। सोच। तेरे यहां जो बारिश होती

है वह तेरी वजह से नहीं तेरे यहां के पशु-पक्षियों से होती है। सारी की सारी बात जो भी थी फ़कीर ने बोल दिया। तब तैमूर को होश आया।

- भगवान कहते हैं "विसर्गः कर्मसंज्ञितः" भाव को उत्पन्न करने वाला जो त्याग है, वह 'कर्म' नाम से कहा गया है।
- हमारे अंदर भावों का इतना बड़ा महत्व है पूरा संसार भावों का, कर्मों के अनुसार सारा संसार बसता चला जाता है। हमारे कर्म जैसे होते है वैसे लोग मिलते चले जाते हैं। कई बार भाग्य से अच्छी पत्नी मिलती है, पति मिलता है, संगति मिलती है। सानिध्य मिलता है संतों का, गुरु का।
- तुलसीदास जी कहते हैं -
  एक घड़ी आधी घड़ी, आधी में पुनि आध। तुलसी संगत साधु की, हरे कोटि अपराध।
  तुलसी दास जी कहते हैं साधु पुरुष की संगत से हमारे अनंत कोटि जन्मों के अपराध नष्ट हो जाते हैं।
- साधु संगत में थोड़े समय में कई अपराध समाप्त हो जाते हैं। स्वाध्याय और सत्संग की महिमा क्योंकि हमारे अंदर अच्छे भाव आये। अच्छे कर्म होंगे तो अच्छे परिणाम मिलेंगे। हम अपने विचारों-भावों का आंकलन करें तो आप पाएंगे कि बहुत सी साधारण सी मनः स्थिति में हम जीते हैं।
- रोज सुबह उठते ही एक बात अपने आप से कहें - गीता का श्लोक -
  श्लोक -
  (आत्म-उद्धार के लिए प्रेरणा)
  उद्धरेदात्मनाऽत्मानं नात्मानमवसादयेत्।
  आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः॥
  भावार्थ - अपने द्वारा अपना संसार-समुद्र से उद्धार करे और अपने को अधोगति में न डाले क्योंकि यह मनुष्य आप ही तो अपना मित्र है और आप ही अपना शत्रु है ॥6/5॥
  श्लोक -
  बन्धुरात्मात्मनस्तस्य येनात्मैवात्मना जितः।
  अनात्मनस्तु शत्रुत्वे वर्तेतात्मैव शत्रुवत्॥
  भावार्थ - जिस जीवात्मा द्वारा मन और इन्द्रियों सहित शरीर जीता हुआ है, उस जीवात्मा का तो वह आप ही मित्र है और जिसके द्वारा मन तथा इन्द्रियों सहित शरीर नहीं जीता गया है, उसके लिए वह आप ही शत्रु के सदृश शत्रुता में बर्तता है॥6/6॥
- **"रे मन मेरे तू मेरा मित्र बन"। मित्र बनकर तू मुझे अच्छे सुझाव दे।**
- अंदर का मन ही गड़बड़ियां करता है इसे ठीक करो इसके लिए अलसी मन को दूर कर दो और अच्छे मन को मित्र बनाओ। ताकि हमारे कर्म ठीक-ठीक हों। कुछ लोग होते हैं जिसमें बुरे भाव होने के बाद भी अच्छी संगति से बदल जाते हैं। जैसे - अंगुलिमाल (बुद्ध का सत्संग), यदाई-मदाई (चैतन्य महाप्रभु का सत्संग), ऋषि वाल्मीकि(नारद के सत्संग से)।
- हमारे कर्मों में, व्यक्तित्व में जो परिवर्तन आता है वह हमारे भावों से आता है।
- कर्म का बीज है भाव और भाव को उत्पन्न करने वाला त्याग है हमारा कर्म।
- मनः स्थिति और परिस्थिति के बीच का संवाद है कर्म।

---------- ॐ शान्ति ----------

Watch Audio/Video Discourse of this class on YouTube. Visit us on you tube – **shantikunjvideo**

www.awgp.org | www.dsvv.ac.in